नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

अरावली : विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन जरूरी

अरावली पर्वत श्रृंखला केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि उत्तर भारत की पारिस्थितिकी का आधार स्तंभ है. यह श्रृंखला थार के रेगिस्तान को हरियाणा, दिल्ली और पश्चिमी उत्तर प्रदेश की ओर बढ़ने से रोकती है, भूजल भंडारण को पोषित करती है और प्रदूषण नियंत्रण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. ऐसे में सुप्रीम कोर्ट के नवंबर 2025 के फैसले के बाद शुरू हुआ विवाद मात्र कानूनी परिभाषाओं का नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की पर्यावरणीय सुरक्षा का प्रश्न बन गया है.

कोर्ट ने विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों के आधार पर अरावली की एक नई वैज्ञानिक परिभाषा स्वीकृत की है, जिसके अनुसार अब केवल वे संरचनाएं 'अरावली' मानी जाएंगी जिनकी ऊंचाई स्थानीय भू-स्तर से 100 मीटर या उससे अधिक है. पर्यावरणविदों का तर्क है कि अरावली का लगभग 90 प्रतिशत क्षेत्र ऐसी छोटी पहाड़ियों और टीलों से बना है जो इस नए मानक से बाहर हो जाएंगे. स्वाभाविक है कि आशंका बढ़ती है कि क्या यह परिवर्तन उन क्षेत्रों को खनन और रियल एस्टेट गतिविधियों के लिए खुला मैदान बना देगा, जो अब तक कानूनी सुरक्षा के दायरे में थे ?

दूसरी ओर, राज्य सरकारों,विशेषकर राजस्थान,का तर्क आर्थिक है. उनका कहना है कि पूर्ववत विस्तृत परिभाषा के चलते खनन गतिविधियों का बड़ा हिस्सा प्रतिबंधित हो गया था, जिससे रोजगार और राजस्व दोनों पर प्रभाव पड़ा. खनन उन क्षेत्रों में आजीविका का बड़ा स्रोत है, इसलिए उसके पूरी तरह रुकने से सामाजिक-आर्थिक असंतुलन उत्पन्न हो सकता है. अदालत ने इसी संतुलन को ध्यान में रखते हुए मौजूदा कानूनी खनन को जारी रखने की अनुमति दी है, जबकि नए पट्टों पर रोक लगाकर एक सतत खनन प्रबंधन योजना तैयार करने का निर्देश दिया है. फिर भी, सवाल कायम है कि क्या 100 मीटर का पैमाना अरावली जैसी प्राचीन, क्षयग्रस्त पर्वत श्रृंखला को परिभाषित करने के लिए वैज्ञानिक रूप से उपयुक्त है ? कई विशेषज्ञों का मानना है कि अरावली का भू-आकृतिक इतिहास अन्य पर्वत श्रृंखलाओं से भिन्न है. लाखों वर्षों के क्षरण ने इसकी ऊंचाइयों को छोटा किया है, पर इसका पारिस्थितिक महत्व कम नहीं हुआ. छोटी पहाड़ियां भी भूजल रिचार्ज, जैव-विविधता और प्राकृतिक अवरोध के रूप में उतनी ही उपयोगी हैं जितनी ऊंची संरचनाएं.

आज उत्तर भारत जिस प्रदूषण, जल संकट और मरुस्थलीकरण के खतरे से जूझ रहा है, उसमें अरावली की भूमिका और अधिक निर्णायक हो जाती है. यदि यह प्राकृतिक दीवार कमजोर हुई, तो धूल भरी आंधियां और रेत के विस्तार का दबाव एनसीआर तक महसूस किया जाएगा. भूजल स्तर पहले ही संकट में है,ऐसे समय में पहाड़ी संरचनाओं का और क्षरण किसी बड़े पारिस्थितिक संकट को जन्म दे सकता है. केंद्र सरकार का 'अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट' निश्चित रूप से स्वागतयोग्य पहल है. वृक्षारोपण, हरित आवरण और बफर जोन जैसे उपाय पारिस्थितिकी को सांस देते हैं. परंतु इस परियोजना के साथ-साथ यह भी सुनिश्चित करना होगा कि कानूनी सुरक्षा ढांचा कमजोर न पड़े. हर नीति का मूल उद्देश्य यही होना चाहिए कि विकास के साथ पर्यावरणीय संतुलन भी अक्षुण्ण रहे.

यह सही समय है जब नीति-निर्माता, वैज्ञानिक समुदाय, स्थानीय समाज और न्यायालय—सभी एक साझा समझ विकसित करें. अरावली को केवल ऊंचाई के मानकों में नहीं, बल्कि उसके पर्यावरणीय योगदान के आधार पर देखा जाए. खनन के आर्थिक हितों को अस्वीकार नहीं किया जा सकता, पर इन्हें प्रकृति के दीर्घकालिक नुकसान से बड़ा नहीं ठहराया जा सकता. अरावली हमारे समय की परीक्षा है कि क्या हम अल्पकालिक लाभों के लिए अपनी प्राकृतिक ढाल को कमजोर होने देंगे, या उसे आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखेंगे ? इसका उत्तर हमें आज ही तय करना होगा.

जन्मदिवस पर विशेष

युग दृष्टा और सुशासन के प्रवर्तक थे अटलजी

भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है...
...यह चन्दन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है
यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है
इसका कंकर-कंकर शंकर है, इसका
बिन्दु-बिन्दु गंगाजल है
हम जियेंगे तो इसके लिये, मरेंगे तो इसके लिये..

डॉ. मोहन यादव

मां भारती के लिए सर्वस्व अर्पण करने वाले पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न, राष्ट्रपुरुष श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की 101वीं जयंती पर उन्हें शत् शत् नमन. अटलजी नवसृजन और नवउत्थान के स्वप्नदृष्टा, भारतीय राजनीति के ऐसे युगपुरुष थे जिनका जीवन और चिंतन देश की आत्मा से जुड़ा था. वे सबके प्रिय थे, सबके अपने थे और जन-जन के हृदय में बसे अजातशत्रु राजनेता थे.

श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी का जीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक साधारण कार्यकर्ता से आरंभ होकर राष्ट्रधर्म के संपादक, भारतीय जनसंघ के मजबूत आधार और भारतीय जनता पार्टी को सर्वोच्च नेतृत्व तक पहुंचाने वाली एक अनुपम और प्रेरक यात्रा रहा है. वे राजनीति को व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण का माध्यम मानते थे. उनके नेतृत्व और मार्गदर्शन में समर्पित कार्यकर्ताओं की अनेक पीढ़ियां तैयार हुईं, जिनके लिए सेवा, त्याग और राष्ट्रनिष्ठा जीवन का लक्ष्य बन गई. अटल जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था. वे श्रेष्ठ कवि, सफल पत्रकार, दूरदृष्टा, विचारक तथा चिंतक थे, जिन्होंने भविष्य के भारत का स्वप्न देखा और उस पर चलने का मार्ग प्रशस्त किया. मुझे बताते हुए खुशी है कि माननीय यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में श्रद्धेय अटलजी के स्वप्न को आकार दिया जा रहा है.

देश की बहुआयामी प्रगति, समृद्धि और विकास के परिणाम धरातल पर दिखाई दे रहे हैं. इसमें एक ओर प्रत्येक नागरिक की औसत आय बढ़ी है, देश विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बना है. वहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी साख निर्मित हुई कि वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए कई देशों के प्रमुख भारत की ओर देखते हैं. हमारे लिए गर्व की बात है कि यशस्वी प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश ने विकास की नई करवट ली है. इसी क्रम में 25 दिसंबर को श्रद्धेय अटलजी के जन्म जयंती अवसर पर ग्वालियर में अभ्युदय मध्यप्रदेश ग्रोथ समिट का आयोजन किया जा रहा है, इसमें निवेश और नवाचार की अनंत संभावनाएं आकार लेंगी. प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी ने देश को अभूतपूर्व ऊंचाइयों तक पहुंचाया. सड़क, संचार, आधारभूत संरचना, शिक्षा, विज्ञान और तकनीक, हर क्षेत्र में उन्होंने मजबूत नींव रखी. जहां प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से गांवों को विकास की मुख्यकधारा से जोड़ा वहीं सर्वशिक्षा अभियान से शिक्षा को हर वर्ग, हर समुदाय और हर क्षेत्र तक पहुँचाया.

पोखरण में भारत की सामरिक शक्ति का प्रदर्शन हो या स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना के माध्यम से देश को जोड़ने का संकल्प, हर निर्णय में राष्ट्रहित सर्वोपरि रहा है. श्रद्धेय अटल जी की दूरदर्शिता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण नदी जोड़ो अभियान की परिकल्पना है. उन्होंने जल समस्या का स्थायी समाधान बिखरी हुई जलराशि के समुचित प्रबंधन में निकाला. उनका सपना था कि देश की नदियां आपस में जुड़ें, जल की एक-एक बूंद का उपयोग हो और धरती सुजलाम्-सुफलाम् बने. हम सभी के लिए गर्व की बात है कि श्रद्धेय अटल जी के इस संकल्प को साकार करने में मध्यप्रदेश अग्रणी भूमिका निभा रहा है. मध्यप्रदेश नदियों का मायका है, अपनी सैकड़ों नदियों की जलराशि से पूरे क्षेत्र को समृद्ध करने की क्षमता रखता है. यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है, जहां नदियों को जोड़ने के महाअभियान के तहत दो परियोजनाएं प्रारंभ हो चुकी हैं. पार्वती-कालीसिंध-चंबल और केन-बेतवा लिंक परियोजनाओं के माध्यम से अनेक नदियों का जुड़ना तय हुआ है. इन परियोजनाओं से जल संकट वाले क्षेत्रों में नई आशा जगेगी और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी.

अटलजी विकास को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना चाहते थे. इसी दिशा में मध्यप्रदेश सरकार ने विकास के नए प्रतिमान स्थापित किए हैं. रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव जैसे नवाचारों के माध्यम से उद्योगों को छोटे शहरों और अंचलों तक पहुंचाया गया है. इससे पलायन रुकने के साथ स्थानीय युवाओं को रोजगार मिल रहा है. अटलजी के शासनकाल में शुरू हुई दिल्ली मेट्रो आज विश्वस्तरीय अधोसंरचना के रूप में स्थापित हो गई है. मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि अब हमारा भोपाल भी मेट्रो वाली राजधानी बन गया है.

(लेखक, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

गौ-आधारित प्राकृतिक खेती और स्वस्थ जीवन है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मिशन

विकसित भारत का कृषि मॉडल

राजेंद्र शुक्ल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत आज विकास के उस मार्ग पर अग्रसर है, जहाँ आर्थिक प्रगति के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सांस्कृतिक मूल्यों को समान महत्व दिया जा रहा है. इसी समग्र दृष्टि के अंतर्गत भारतीय कृषि को भी एक नए युग की ओर ले जाया जा रहा है. कृषि सदियों से हमारी सभ्यता की रीढ़ रही है. आधुनिक युग में रासायनिक उर्वरकों और सिंथेटिक कीटनाशकों पर अत्यधिक निर्भरता ने खेती की लागत बढ़ाने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरता, उसकी जलधारण क्षमता और दीर्घकालिक स्थिरता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है. परिणामस्वरूप, हमारे भोजन की गुणवत्ता और नागरिकों के स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है.

प्रधानमंत्री मोदी जी ने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि भारत की समस्याओं का समाधान हमारी अपनी परंपराओं और ज्ञान प्रणाली में निहित है. इसी विचार से प्राकृतिक खेती को राष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहन मिल रहा है, जो भारतीय कृषि की मूल आत्मा से जुड़ी हुई है.

आज आवश्यकता इस बात की है कि कृषि को केवल उत्पादन के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, स्थिरता और आत्मनिर्भरता के व्यापक संदर्भ में देखा जाए. भारत की पारंपरिक कृषि व्यवस्था सह-अस्तित्व और संतुलन पर आधारित रही है, जिसमें गौमाता की भूमिका केंद्रीय रही है. गौ केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि उत्पादकता और पोषण सुरक्षा का आधार रही हैं. हमारे पूर्वज जानते थे कि गौवंश का संरक्षण सीधे मिट्टी के स्वास्थ्य से जुड़ा है. गोबर और गोमूत्र से भूमि को पोषण मिलता है, सूक्ष्म जीव सक्रिय होते हैं और मिट्टी पुनः जीवंत होती है. स्वस्थ मिट्टी से प्राप्त अन्न अधिक पौष्टिक, सुरक्षित और मानव शरीर के अनुकूल होता है.

प्राकृतिक खेती कृषि तकनीक नहीं, बल्कि जीवन जीने की पद्धति- प्रधानमंत्री मोदी जी की दृष्टि में प्राकृतिक खेती केवल एक कृषि तकनीक नहीं, बल्कि जीवन जीने की भारतीय पद्धति है. वे इसे किसानों की लागत घटाने, आय बढ़ाने और उन्हें बाहरी निर्भरता से मुक्त करने का सशक्त माध्यम मानते हैं. साथ ही, यह देशवासियों को रसायन-मुक्त, विषरहित भोजन उपलब्ध कराने का मार्ग है. यही कारण है कि प्राकृतिक खेती को आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत के लक्ष्य से जोड़ा गया है.

प्राकृतिक खेती की कार्यप्रणाली सरल, स्वदेशी और प्रभावशाली है. इसमें गौशालाओं को केवल संरक्षण केंद्र नहीं, बल्कि कृषि आदानों के उत्पादन के आर्थिक केंद्र के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है. गोबर और गोमूत्र से तैयार जीवामृत, बीजामृत और पंचगव्य जैसे प्राकृतिक इनपुट मिट्टी के सूक्ष्म जीवों को सक्रिय करते हैं और भूमि की उर्वरता को दीर्घकालिक रूप से बढ़ाते हैं. पलवार (मल्चिंग) जैसी तकनीकें मिट्टी की नमी बनाए रखती हैं, जल संरक्षण में सहायक होती हैं और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से फसलों की रक्षा करती हैं. इन उपायों से खेती की लागत में उल्लेखनीय कमी आती है, जिससे शून्य बजट प्राकृतिक खेती का लक्ष्य व्यवहारिक रूप से संभव होता है.

सहकारिता से समृद्धि और संस्थागत शक्ति- प्राकृतिक खेती को जन-आंदोलन बनाने में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी का मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है. उनके विजन सहकारिता से समृद्धि के तहत, प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को संगठित किया जा रहा है एवं किसान उत्पादक संगठनों को सशक्त बनाया जा रहा है ताकि छोटे किसानों को न केवल सस्ती दरों पर प्राकृतिक खाद-बीज मिल सकें, बल्कि उनके विषमुक्त उत्पादों को उचित बाजार और लाभकारी मूल्य भी प्राप्त हो सके. गौ-आधारित प्राकृतिक खेती और सहकारिता का मेल ही ग्रामीण समृद्धि का नया मार्ग है. प्राकृतिक खेती का महत्व केवल खेत तक सीमित नहीं है; इसका सीधा संबंध मानव स्वास्थ्य और जीवनशैली से है. आज जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ तेजी से बढ़ रही हैं, जिनका एक बड़ा कारण रासायनिक अवशेषों से युक्त भोजन है.

प्राकृतिक खेती से प्राप्त शुद्ध और विषमुक्त अन्न पाचन तंत्र को सुदृढ़ करता है, रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और दीर्घकालिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है.प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा योग और आयुष को वैश्विक पहचान दिलाना इसी समग्र स्वास्थ्य दृष्टि का हिस्सा है.

(लेखक मध्यप्रदेश के उप मुख्यमंत्री हैं)

अटल स्मृति वर्ष : विचार जो अटल थे, संकल्प जो मोदी जी ने साकार किए

हेमन्त खण्डेलवाल

25 दिसंबर केवल एक तिथि नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की वैचारिक यात्रा का स्मरण दिवस है. यह वह दिन है, जब राष्ट्र अटल बिहारी वाजपेयी जी जैसे युगद्रष्टा नेता की जन्मजयंती मनाता है. उनका जन्मशताब्दी वर्ष हमें उनके विचारों, संकल्पों और सपनों को और गहराई से आत्मसात करने का अवसर देता है. भारतीय जनता पार्टी द्वारा अटल स्मृति वर्ष के रूप में इस कालखंड को मनाना, अतीत के गौरव को वर्तमान की जिम्मेदारी और भविष्य के संकल्प से जोड़ने का सशक्त प्रयास है.

अटल जी का व्यक्तित्व विचार और संवेदना का दुर्लभ संगम था. वे दृढ़ राष्ट्रवादी थे, किंतु संवाद और सहमति के पक्षधर भी. सत्ता में रहते हुए भी उनकी भाषा में मर्यादा और व्यवहार में विनम्रता रही. कविता उनकी आत्मा थी और राष्ट्रसेवा उनका जीवन-संकल्प. यही कारण है कि वे केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि लोकतंत्र की गरिमा के प्रतीक के रूप में स्मरण किए जाते हैं.

प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी ने सुशासन को व्यवहार में उतारा. पोखरण परमाणु परीक्षणों से भारत की सामरिक आत्मनिर्भरता स्थापित हुई, तो कारगिल जैसे कठिन समय में उन्होंने पूरे देश को एकजुट नेतृत्व दिया. स्वर्णिम चतुर्भुज, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और दूरसंचार क्षेत्र में किए गए सुधार-ये सभी उस विकसित भारत की आधारशिला बने, जिसकी दूरदृष्टि अटल जी ने वर्षों पहले देख ली थी. अटल बिहारी वाजपेयी जी का मध्यप्रदेश से रिश्ता केवल राजनीतिक नहीं, ऐतिहासिक और भावनात्मक भी था. ग्वालियर को कर्मभूमि बनाकर उन्होंने इस प्रदेश से आत्मीय संबंध स्थापित किया. ग्वालियर की जनता ने उन्हें लोकसभा में भेजा, तब यह केवल एक चुनावी विजय नहीं थी, बल्कि कठिन समय में दिया गया वह विश्वास था जिसने अटल जी को राष्ट्रीय नेतृत्व की नई ऊर्जा प्रदान की.

> आज पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो लगता है कि अटल जी की वही अडिग दृष्टि आज यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में पूर्ण सिद्धि को प्राप्त हुई है. भारतीय जनता पार्टी आज विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है. यह केवल संगठनात्मक विस्तार नहीं, बल्कि विचार की विजय है. भाजपा आज सत्ता की राजनीति नहीं, बल्कि जनकल्याण, लोककल्याण और सेवा-आधारित सुशासन का पर्याय बन चुकी है. अटल जी का वह विश्वास, जो 1980 में चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में व्यक्त हुआ था, आज विकसित भारत के संकल्प के रूप में साकार खड़ा है-आत्मविश्वास से भरा, संकल्पबद्ध और राष्ट्रहित को समर्पित.

श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्मभूमि ग्वालियर को यह भी गौरव प्राप्त है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानवदर्शन की वैचारिक धारा को यहीं प्रथम स्वर मिला. अटल जी की विचारशील राजनीति और एकात्म मानवदर्शन की यह संगति ग्वालियर को भारतीय लोकतंत्र की वैचारिक चेतना का विशेष केंद्र बनाती है.

अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्मशताब्दी के अवसर पर ग्वालियर की धरती का पुनः राष्ट्रीय विमर्श का केंद्र बनना कोई संयोग नहीं, बल्कि वैचारिक निरंतरता का प्रतीक है. 25 दिसंबर को माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का ग्वालियर आगमन और अभ्युदय एमपी ग्रोथ समिट-2025 जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम में उनकी सहभागिता, अटल जी की विकास-दृष्टि को वर्तमान भारत से जोड़ने वाला सशक्त संदेश है. जिस ग्वालियर ने अटल जी को राष्ट्रनेतृत्व की नई दिशा दी थी, वही ग्वालियर आज उनके विचारों के अनुरूप विकास,सुरक्षा और आत्मनिर्भरता के नए अध्याय का साक्षी बन रहा है. अटल जी का सपना था-एक ऐसा भारत जो मजबूत भी हो और संवेदनशील भी; जो विकास करे, पर मूल्यों से विमुख न हो; जो आत्मनिर्भर बने, पर विश्व के साथ संवाद बनाए रखे. आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 'विकसित भारत 2047' की दिशा में आगे बढ़ता राष्ट्र उसी अटल दृष्टि का आधुनिक और सशक्त विस्तार है. डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, मजबूत आधारभूत संरचना और वैश्विक मंच पर भारत की निर्णायक भूमिका ये सभी अटल जी के स्वप्न को साकार करते हुए दिखाई देते हैं.

अटल जी के विचारों की दृढ़ता को यदि किसी ने निकट से जिया है, तो वह हमारी पीढ़ी है. मुझे स्मरण है वर्ष 1980 का वह समय, जब मैं मात्र 16 वर्ष का था. उसी वर्ष मेरे पिताजी स्वर्गीय विजय खंडेलवाल जी बैतूल जिले के पहले निर्वाचित भाजपा जिला अध्यक्ष बने. जनता पार्टी से अलग होकर भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई थी. संख्या बल सीमित था,कार्यकर्ताओं पर दबाव था,सत्ता का आकर्षण त्याग कर हम एक कठिन वैचारिक यात्रा पर निकले थे.

उसी दौर की एक स्मृति आज भी मन में ताज़ा है. अटल बिहारी वाजपेयी जी हमारे घर आए थे,साधारण माहौल, खाने की मेज़ पर बातचीत, कभी हल्की मुस्कान, कभी आत्मीय ठहाका. अटल बिहारी वाजपेयी जी कभी बोझिल नहीं दिखते थे. चुनौतियाँ थीं,लेकिन उनके चेहरे पर निराशा नहीं होती थी. वे बड़े सहज भाव से कहते थे कि आज हम कम ज़रूर हैं, पर हमारा भरोसा मजबूत है,और यही भरोसा आगे चलकर ताक़त बनेगा. उनका विश्वास यही था कि यह रास्ता भले कठिन हो, पर सही है-क्योंकि यह सत्ता का नहीं, राष्ट्रसेवा का मार्ग है.उनकी वही सहजता, आत्मबल और भविष्य पर अडिग भरोसा हम जैसे युवाओं के लिए उस समय सबसे बड़ा संबल बन गया.

आज पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो लगता है कि अटल जी की वही अडिग दृष्टि आज यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में पूर्ण सिद्धि को प्राप्त हुई है.

(लेखक भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के अध्यक्ष हैं.)

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12121

-डॉ. सागर खादीवाला

1		2		3	■	4	
	■		■	5	6		■
7	8		■	9			10
■	11		12	■		■	
13	■	14		15		16	■
17	18		■		■	19	20
21		■	22		■	23	
24				■	25		

बाएं से दाएं

1. जिसका हाल ही में गठन हुआ हो 4. बेटा, पुत्र 5. ग्रहण या अंगीकार करने की क्रिया मंजूरी 7, लज्जा, दया 9. हिंडोले पर पेंग मारना, झूमते या इतराते हुए चलना 11. तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना, दृढ़तापूर्वक बैठना 14. जन्म दिन, वर्षगांठ (उर्दू) 17. वह पात्र जिसमें पौधे लगाते हैं 19. लोहे या काठ की मेख, नाक का एक आभूषण, लौंग 21. जलन, ताप, मुर्दा जलाना 22. चटपटी वस्तु, व्यसन 23. आने वाला या बीता हुआ दिन 24. वह जमीन जिस पर चलने से पैर धंस जाता हो, कीचड़, पंक 25. हानिकर घात करने वाला, हत्यारा

ऊपर से नीचे

1. राजा (सं.) 2. भोजन में काम आने वाला मसाला जिसमें लौंग, इलायची, जीरा, काली मिर्च आदि होती है 3. चित्र (उर्दू) 4. पूरा करने वाला, किसी के साथ मिलकर उसे पूर्ण स्वरूप प्रदान करने वाला 6. काम से जी चुराने वाला 8. धूल 10. छोटे कद का, बौना 12. घोड़ों की टाप में लगाया जाने वाला अर्ध चंद्राकार लोहा 13. इराक की राजधानी 15. चांदी के समान सफेद रंग की तथा हल्की तथा सस्ती धातु 16. असलियत, वास्तविक बात (उर्दू) 18. राजप्रासाद (उर्दू) 20. प्रबल अभिलाषा 22. चलने की क्रिया या ढंग

Solution 12120

सु	शि	क्षि	त	■	ड	ग	र
अ	■	ति	न	का	■	व	■
व	न	ज	■	ल	व	ली	न
स	ब्ज	■	च	को	र	■	ग
र	■	मे	र	ठ	■	पी	र
■	फु	ल	वा	री	■	पा	पा
सा	ला	■	हा	■	म	■	लि
ध	ना	ढ्य	■	नी	हा	रि	का

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में यात्रा होगी. पद एवं स्थान परिवर्तन के योग है. शारीरिक कष्ट का सामना करना पडेगा. भौतिक सुख प्राप्त होगा. उत्तरदायित्वों को सम्हालने की आवश्यकता है. वर्ष के मध्य में व्यापार के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. यात्रा से कष्ट होगा. वर्ष के अन्त में विवाद एवं मतभेद हो सकते है. आय में सुधार होगा. भाईयों का सहयोग रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को रचनात्मक प्रयास सार्थक होंगे. भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा का योग है. दाम्पत्य जीवन में कलह की स्थिति न आने दें. सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यो में वृद्धि होगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को दिनचर्या में व्यवधान आयेगा. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को राजनीतिक गतिविधियों में वृद्धि होगी. पद एवं प्रभाव बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, स्वस्थ्य, मिलनसार, अच्छे व्यक्तित्व का धनी और परिश्रमी होगा, कार्यो में अच्छी सफलता प्राप्त करेगा. यह अमीरी जीवन व्यतीत करेगा, माता पिता को सुखी रखेगा, शिक्षा साधारण होते हुये भी अच्छी सफलता प्राप्त करेगा.

मेष- विरोधी वर्ग उलझाने का कार्य करेगा, व्यापारिक यात्रा का योग है, परिश्रम अधिक करना होगा, अनपेक्षित कार्यो पर खर्च होगा, उदर विकार संभव है.

वृषभ- सुविधा की कमी से कामकाज में मुश्किल होगी, मतभेद दूर होने से रिश्ते मजबूत होंगे, बांधव सुख मिलेगा, मनोरजन के कार्यो में खर्च होगा.

मिथुन- राजकीय कार्यो में लापरवाही से नुकसान होगा, वाणी पर नियंत्रण रखें, आर्थिक संतुलन बनाये रखें, राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी.

कर्क- पारिवारिक मित्रों से मुलाकात सुखद होगी, वैभव के सामान पर खर्च होगा, स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा, स्वजनों के कार्य में सहयोग रहेगा.

सिंह- खानपान की गड़बड़ी से स्वास्थ्य खराब होगा, वाहन चलाने में सावधानी रखें, जहां तक बने आप किसी को अधिक भरोसे में न रखें, परेशानी हो सकती है.

कन्या- योजनाओं को पूरा करने में मुश्किल होगी, आय के नए श्रोत मिलेंगे, पारिवारिक सामंजस्यता बनी रहेगी, मांगलिक कार्यो की रूपरेखा बनेगी.

तुला- अधिकारियों की मदद से सफलता मिलेगी, जोखिम के कार्यो से दूर रहें, विवादास्पद स्थितियों को टालने का प्रयास करें, आर्थिक लाभ होगा.

वृश्चिक- इच्छित सफलता के लिये कार्य योजना में बदलाव संभव है, स्वास्थ्य का ध्यान रखें, आर्थिक लाभ होगा, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

धनु- न चाहते हुये भी किसी की मदद करना पडेगी, दूर दराज की यात्रा का योग बन सकता है, प्रियजनों से भेंटवार्ता होगी, हर्षोल्लास समाचार मिलेगा.

मकर- आवेश में आकर गलत फैसला कर सकते हैं, हितचिन्तक की सलाह लेना लाभकारी है, कार्यो को गति मिलेगी, उठाईगीरों से सावधानी बांछनीय.

कुम्भ- उच्च अध्ययन में सफलता मिलेगी, कार्य योजना में अडंगे लग सकते हैं, आर्थिक लेनदेन कम करें, सतर्कता सूझबूझ से काम करें, खर्च अधिक होगा.

मीन- जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, राजकीय मामले में पक्ष मजबूत होगा, शारीरिक अस्वस्थ्यता में सुधार होगा, नियोजित कार्य पूर्ण होंगे.

उदयकालीन ग्रह चाल

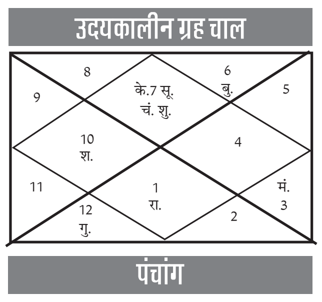

पंचांग

रा.मि. 04 संवत् 2082 पौष शुक्ल पंचमीं गुरूवासरे दिन 10/41, शतभिषा नक्षत्रे रातअंत 6/11, वज्र योगे दिन 1/39, बालव करणे सू.उ. 6/47, सू.अ. 5/13, चन्द्रचार कुम्भ, शु.रा. 11, 1, 2, 5, 6, 8 अ.रा. 12, 3, 4, 7, 9, 10 शुभांक- 4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

पौष शुक्ल पंचमीं को शतभिषा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड, गेहूँ, शक्कर, जौ, चना, रूई, आदि में तेजी होगी, अरहर उड़द, मूँग, मोठ, में घटाबढ़ी होगी, लालमिर्च के भाव में मंदी होगी, भाग्यांक 1475 है.

SUDOKU 7253

		5			8			3
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6			7			1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
6			2			7		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7252

9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8